Impact Factor – 3.452

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Febrtiary-2018

SPECIAL ISSUE-XL

भारतीय साहित्यावर जागतिकीकरणाचा परिणाम

भारतीय साहित्यपर भूमंडलीकरण का परिणाम

Effects of Globalization on Indian Literature

अतिथी संपादक :

प्राचार्य डॉ. अरुण डी. येवले

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,

रावळगांव, ता. मालेगांव, जि. नाशिक

विशेषांक कार्यकारी संपादक :

उपप्राचार्य गौतम एस. निकम

प्रा. शरद टी. आंबेकर

प्रा. नारायण एल. सोनवणे

प्रा. स्वप्नील पी. गरुड

प्रा. जितेंद्र व्ही. मिसर

मुख्य संपादक -:

डॉ. धनराज धनगर

Indexed In :

- Journal List No. 40705 & 44117
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

"RESEARCH JOURNEY" International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) - 0.676 (2013)
Special Issue 40 : Globalization
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

31	वैश्विकरण और हिंदी भाषा	- प्रा. लक्ष्मण पेटकुले	145
32	भूमंडलीकरण और हिंदी भाषा	- डॉ. म्ही.डी. सूर्यवंशी	147
33	वैश्विकरण, मिडीया और हिंदी	- प्रा. सैराज तडवी	149
34	'ग्लोबल गाव के देवता' उपन्यास मे वैश्विकरण के परिदृश्य	- डॉ. अशोक पवार	152
35	वैश्विकरण और हिंदी	- डॉ. अनिता पवार	155
36	भूमंडलीकरण और हिंदी	- श्री रविंद्र सोनारे	159

English Section

Effects of Globalization on Indian Literature

37	The Impact of Globalization on Literature through Communicative Media, Language and Technology - Dr. Vaibhav Sabnis	163
38	Oleander Girl: an Odeyssy of Indian (Immirgat) Women towards modernity - Dr. Kalyan Kokane	170
39	Dalit Women: 'Downtrodden among the Downtrodden' - P. P. Roy & K. P Abidha	174
40	Globalisation and Its Impact on English Language - Dr. S. D. Sindkhedkar	178
41	Gender and Equality in the Era of Globalization : 'A Study of Rabindranath Tagore's Plays *Chitra* and *Chandalika*' - Mr. Deepak D. Deore	183
42	The Nature of Globalization in Our Time and Its Impact on Indian English Poetry - Prof. Mukund S. Bhandari	186
43	Globalisation and Varkari Thought - Narayan Sonawane	191
44	In Intake Globalized World Fortuity for English and Defeat for Other Language - Mr. Salman Khan Pathan	196
45	Globalization and ELT in India - R. R. Borse	199
46	Cooperative Principle in Mahesh Dattani's Stage Plays : 'A Stylistic Approach' - Hemantkumar Patil	202
47	Error Analysis in SLA - Dr. Vaibhav Sabnis & Mr. Dhiraj Vaishnav	205
48	The Social Impact of Globalisation in the Developing Countries - Mrs. Punam Ketan Shirole	208
49	Global Symbols and Themes in the Writings of Khushwant Singh - Shital Sonawane	210

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the pap on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers.

- Executive Editor

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Nashik

Email : swatidhanraj@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 40 : Globalization
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

भूमंडलीकरण और हिंदी भाषा

डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे
कला महाविद्यालय, निमगांव
मो.नं.9421604624

विचारों का आदान-प्रदान को भाषा कहा गया है । वाणीद्वारा अभिव्यक्ति ही भाषा है । भाषा सामाजिक सम्पति है जो अनुकरण से अर्जित की जाती है । हम जिस परिवेश, समाज और परिवार में जन्म लेते है वहाँ जो भाषा जिस सुर, भाव, लहता या स्वराघात के साथ बोला जाता है हम वैसे ही सीखते है । बच्चा सबसे जादा अपनी माँ से भाषा सीखता है क्योंकि माँ की भाषा से संबंध गर्भ से शुरु हो जाता है । इसलिए इसे मातृभाषा की संज्ञा देते है। भूमंडलीकरण संपूर्ण विश्व को एक ग्राम में बदल करने कि अवधारणा है । जहाँ कोई सीमा नही होती कोई दीवार नहीं होती । भूमंडलीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसने पूरी दुनिया की तस्वीर बदल दी है। वर्तमान समय बाजारवाद का है। मानव मूल्य के साथ-साथ जीवन का प्रत्येक क्षेत्र बाजारवाद से प्रभावित है । प्रत्येक गतिविधी व्यवसायिक दृष्टीकोन या तो स्वत: अपना रहा है या अपनाने को मजबूर है ।

हिंदी अपनी भाषा में काई छोटे-छोटे रुप ले चुकी है, जैसे साहित्यिक हिंदी, व्यावसायिक हिंदी, राजाभाषा हिंदी, सिनेमाई हिंदी आदि । पहले पहल ग्रीनफिल्ड ने परिवार, धर्म, मित्रता, शिक्षा और रुप को अधिक वैज्ञानिक ढंग से परिभाषित और निर्धारित करने का प्रयास किया । उनका प्रयोग क्षेत्र-घर, शिक्षा अर्थात विद्यालय, प्रशासनिक, कार्यालयी, कानून, व्यापार धर्म साहित्य, संचार माध्यम रहा है। जबसे भूमंडलीकरण कि प्रक्रिया तेज हुई तबसे एक बार फिर भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हिंदी कि तुलना में अंग्रेजी का महत्व बढा है । आज हम राजनैतिक स्तर पर भलेही उपनिवेशवाद से स्वतंत्र हो परंतु सांस्कृतिक स्तर पर उपनिवेशवाद के प्रभाव और मानसिक गुलामी के शिकार है । भारत में 1991 में उदारीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई । शिक्षा को बाजारोन्मुखी बनाने के प्रयास आरंभ हुई । हिंदी प्रभाव और वर्चस्व धुमिल होता है । जब से भूमंडलीकरण की प्रक्रिया तेज हुई है, तबसे भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हिंदी की तुलना में अंग्रेजी भाषा का महत्व बढा है । आजकल मुक्त व्यापार और भूंमडलीकरण के समर्थक एक ओर अंग्रेजी के माध्यम से अंतराष्ट्रीय होने और बनने की कोशिश कर रहे है तो दुसरी और हिंदी को पिछडेपन का प्रतीक समझते है।

भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद पर संगोष्ठियाँ ली जा रही है । इसमें सातवे विश्व हिंदी साहित्य संम्मेलन की भूमिका सराहनीय है, जिसमें संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को अधिकाधिक भाषा बनाना, विदेशी विश्यविद्यालयों में हिंदी पीठों की स्थापना करना, उच्चस्तरीय अंतराष्ट्रीय पत्रिका का प्रकाशन, विश्वस्तर पर हिंदी वेबसाईट का सृजन, हिंदी विद्वानों का विश्वनिर्देशिका का प्रकाशन, हिंदी परिषद की स्थापना आदि । भारत में 80 फीसदी लोग हिंदी भाषा को बालेते है और समझते है इसलिए इन कंपनियों ने विज्ञापन के लिए हिंदी भाषा को चूना है । इसका एक और भी कारण है कि हिंदी दुनिया की सबसे सहज और सरल भाषा है । इस संदर्भ में राजकेसरवानी लिखते है की, "हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है समूचे देश में हिंदी समझते है और यही एक डोर है जिससे हम सभी जुडे है ।"

भूमंडलीकरण के कारण भारत में विश्व बाजार की चीजे आ रही है, उनकी खुदरा विक्री को भाषा नहीं है और नही उच्च लागत की वस्तुओं की विदेशों में विक्री की भाषा है । आज समय के अनुसार हिंदी सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों की अनुगुँज उसमें सुनाई पडती है । भूमंडलीकरण बाद हिंदी के अखबारों में भाषा का रुप जितनी तेजी से बदला है उतनी तेजी से हिंदी मानस की सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना नहीं बदली है। आज के बाजारवाद में हिंदी का दौर बढता दिखाई देता है । हिंदी क्षेत्र को बहुसंख्यंक किसान, मजदूर स्त्री, तथा दलित नहीं आते । हिंदी के विद्वान आलोक राम विलास शर्मा

ने ठीक ही लिखा है कि 'समाज में वर्ग पहले से ही होते है। भाषा में कठिन और अस्वभाविक शब्दों के प्रयोग से वे नहीं बनते किंतू इन शब्दों के गढने और उनका व्यवहार करने के बारे में वर्गों की अपनी निती होती है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी भाषा को जीवित रखना है तो सबसे पहले हमें गुलामी मानसिकता को सुधारना होगा, साथ ही सरकारद्वारा हिंदी भाषा को और अधिक रोजगारपरक भाषा बनाना चाहिए। हिंदी में सॉफ्टवेअर पूर्ण रुप से विकसित करना होगा। साथ ही साथ हिंदी भाषा को लाभ के सिद्वांत तक सीमित न रखते हुए उसे सरल एवं लचिली बनाने की आवश्यकता है। विज्ञापनों के माध्यम से व्याकरणिक नियमों का उल्लंघन न हो और उसका व्याकरणिक ढांचा न बिगडे इसकी ततर्कता बरतनी होगी। इस तथ्य की ओर ध्यान देकर उसे निभाने का कार्य करेंगे तो हिंदी भाषा का भविष्य भूमंडलीकरण के दौर में निश्चित ही उज्ज्वल होगा और हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्रसंघ की अधिकारिक भाषा बबने से उसे कोई रोक नही पायेगा।

अत: भूंमडलीकरण के इस दौर में हिंदी को प्रथम भाषा के स्थान पर बनाये रखने के लिए इस प्रक्रिया को अवाध गति से पुरे संसार पर छा जाने लिए तैयार रखान है। इससे भाषा, साहित्य, संस्कृति, मानव जीवन सभी को प्रभावित किया है। अब यहाँ आराम से बैठकर काम नहीं चलेगा यह वह दौर है, जहाँ अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करना आवश्यकत है। जो संघर्ष नहीं करेगा उसका अंत निकट है। हिंदी भाषा में वह सामर्थ्य है जिसके बलबुते पर वह यह जंग जीत सकती है लेकिन इसके साथ हमे भी उत्तरदायित्व निभाना होगा।